सुथरे शाह जी शाकाहारी

सुथरे शाह जी अलमस्त, मनमौजी फकीर थे। वे निडर होकर जहाँ दिल करता था पहुँच जाते थे। एक बार सुथरे शाह जी जहाँगीर बादशाह के दरबार में पहुँच गए। जहाँगीर ने नूरजहाँ से कहा- 'क्या आप जानती हैं यह सुथरा किसका मुरीद है?' वह है तो हिन्दू, किन्तु मुसलमानों के घर का भी खा लेता है, परन्तु गोश्त नहीं खाता। 'आज इसके साथ मज़ाक करना चाहिए।' मल्लिका ने कहा।

इतने में सुथरे शाह जी अन्दर आ गए व बड़े आदर के साथ शहनशाह को झुककर सलाम किया। 'मेरे शहनशाह - मैं एक अर्ज करना चाहता हूँ कई लोगों को शिकायत है कि मैं गोश्त नहीं खाता, जब लेकिन मैं सोचता हूँ कि मैं गोश्त क्यों नहीं खाता, मेरा दिल आवाज देता है कि अगर गोश्त खाना चाहता है तो गाय, सूअर और लेले का मिला कर खा, ताकि किसी को कोई एतराज न हो।' सुथरे की बात सुनकर मल्लिका ने कहा- 'हाँ, तुम एक दिन एक जानवर का, दूसरे दिन दूसरे जानवर का और तीसरे दिन तीसरे जानवर का खा सकते हो।'

यह बात सुनकर सुथरा कहने लगा- 'जिस दिन हम सूअर का माँस खाँयेंगें मुसलमान हमसे नफरत करने लगेंगे। दूसरे दिन गाय का खायेंगे तो हिन्दू नाराज़ हो जायेंगे। परन्तु दोनों को मिलाकर खाया जाए तो किसी को एतराज न होगा।' 'यह कैसे हो सकता है कि आपके लिए कोई दोनों तरह का गोश्त तैयार करे।' एक सिपाही ने कहा। सुथरा कहने लगा–'मैं इसलिए तो शहनशाह कि हजूरी में आया हूँ कि मल्लिका-ए-हिन्दुस्तान हमारी यह ख्वाहिश पूरी करेंगी।'

सुथरा जी यह कह रहे थे तो मल्लिका समझ गई कि जो मज़ाक हम इसके साथ करना चाहते थे वह यह पहले ही समझ गया है। मल्लिका मुस्कुरा कर रह गई।